ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-4* July-2020
Anthology : The Research

मानव विकास में प्रौढ़ शिक्षा का योगदान

Contribution of Adult Education In Human Development

Paper Submission: 15/07/2020, Date of Acceptance: 25/07/2020, Date of Publication: 26/07/2020

वंदना याज्ञिक
व्याख्याता,
गृह विज्ञान विभाग,
पहलवान गुरुदीन महिला महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सीखना एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसकी अभिव्यक्ति व्यवहार द्वारा होती है। यह प्रक्रिया परिवर्तन या परिमार्जन भी हो सकता है सीखने की क्रिया द्वारा व्यवहार में आये परिर्वतन अनुभव पर अधारित होते है और उसमें समायोजन में सहायता प्राप्त होती है। सीखने की क्रिया बाल्यकाल से प्रारम्भ होती है और यौवनावस्था तथा पहुँचते–पहुँचते हम अपनी सभ्यता, संस्कृति, और अपने आस पास के बातावरण से बहुत कुछ सीख लेते है

सीखने की कृया जीवन पर्यत्न चलती रहती है हम अपने आस पास होने वाले परिवर्तनो के साथ समायोजन करते चलते है परिवर्तनो, प्रतिक्रियाओं और सीखने का क्रम इस प्रकार जीवन पर्यत्न चलता रहता है। और शैक्षणिक प्रक्रियाओं का जीवन भर उपयोग करके व्यक्ति अधिकतम व्यक्तिगत विकास को सुनिश्चित कर सकता है।

Psychologically learning is a mental process that is expressed by behavior. This process can also be a change or a refinement, based on the experience experienced in the practice of learning and helps in its adjustment. The process of learning starts from childhood and we learn a lot from our civilization, culture and environment around us as we reach puberty and

The process of learning goes on throughout the life, we keep adjusting with the changes happening around us, the order of changes, reactions and learning goes on in this way. And by using educational processes throughout the life, one can ensure maximum personal development.

मुख्य शब्द : प्रौढ़ शिक्षा, साक्षरता, प्रजातान्त्रिक देश, व्यावसायिक शिक्षा, आवश्यकता, साद्वारता समाज।

Adult Education, Literacy, Democratic Country, Vocational Education, Need, Noble Society.

प्रस्तावना

प्रौढ़ो की सीखने की प्रक्रिया सामान्य शिक्षण से भिन्न होती है। कुछ पृष्ठभूमिक कारक इस क्रिया को प्रभावित करते है। यह पहले भी कहा जा चुका है कि सीखने के क्रम में व्यक्ति की जितनी ही अधिक ज्ञानेद्रियॉ भाग लेती है। व्यक्ति उतना ही अधिक सीख पाता है।

प्रौढ़ शिक्षण में लक्ष्य प्राप्ति एक आवश्यक शर्त है। परिणाम तक पहुँचना वांछित लक्ष्य की प्राप्ति को सघन रूप से होना चाहिए, जहॉ पहुँच कर सीखने वाले को स्वंय लगने लगे कि उसने शिक्षण द्वारा कुछ प्राप्त किया है। सफलता केवल सीखने वाले व्यक्ति को नही वर्न उसके साथ जुडे अन्य व्यक्तियो को भी प्रेरणा स्रोत बनाती है। क्योकि हर व्यक्ति की यह आन्तरिक इच्छा होती है कि वह कुछ करे कुछ प्राप्त करे, कुछ वचत करे तथा अपनी प्रतिष्ठा को बढावा दे। दूसरे को आगे बढता देख कर अन्य व्यक्तियो को ईश्या और प्रतिस्पर्धा भी होती है। किन्तु साथ–साथ अभी प्रेरणा भी मिलती है।

प्रौढ़ शिक्षण को उपचारी शिक्षण भी कहा गया है। क्योकि इसके माध्यम से व्यक्तिक अपने अनेक समास्याओं से जूझने की शक्ति तथा उसके अनेक समाधान प्राप्त करता है। आवश्यकता केन्द्रित शिक्षण होने के कराण सीखने वाले को यह स्वतंत्रता रहती है कि वह अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपनी शिक्षण विषय का चयन करे। क्रियात्मक शिक्षण प्रौढ़ो के व्यक्तिव और व्यवहार के अनेक रूपो से प्रभवित कर सकता है। जैसे– पत्र–पत्रिकाऐ अखवार

पढकर समकालीन स्थितियों से स्वंय को जोड़ना लेखना द्वारा अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करना अपने व्यवहारिक स्वरूप एवं उपयोगिता के कारण वयस्क शिक्षण को क्रियात्मक शिक्षण भी कहा गया है। यह व्यक्ति ही नही उसके परिवेश के सर्वतोमुखी विकास की परिकल्पना करता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति जब बेहतर ढंग से अपना कार्य सम्पादन करने लगता है बेहतर आर्थिक स्थितियो की ओर अग्रसर होता है तो अकेला वह व्यक्ति ही नही, अपितु उसका परिवार उसका समाज और यहॉ तक की वह देश जिसमे वह रहता है प्रगती पद पर अग्रसर होता है। इस प्रकार क्रियात्मक शिक्षण वैयक्तिक विकास के साथ राष्ट्रीय विकास मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रौढ़ शिक्षा का उद्देश्य

सामान्य शिक्षण का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षण प्रमाण–पत्र तथा स्नातकोत्तर उपाधियों तक ही सीमित रहता है तथा शिक्षार्थियों का उद्देश्य यही रहता है। कि वे इन्हें प्राप्त कर नौकरियों के योग्य स्वयं को घोषित कर सकें। पढ़ाये गये अधिकांश विषयों का उपयोग एक सामान्य छात्र अपने जीवन काल में नही कर पाता तथा कुछ लोग तो नौकरियों को प्राप्त कर लेने के बाद पुस्तकों की ओर देखना भी पसन्द नही करते किन्तु प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य कुछ और ही हैं। जो शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों पर लागू होते हैं। शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों का इस बात के प्रति पूरी सतर्कता बरतते है कि पठन–पाठन का सकारात्मक उपयोग हो सके। प्रौढ़ शिक्षण का क्रियात्मक एवं उद्देश्यपूर्ण होना आवश्यक है क्योंकि प्रोढ़ों के लिए उपाधियों, डिग्रियो या प्रमाण–पत्रों की प्रायः कोई उपयोगिता नही होती। उनके लिए तो वही नौकरी या कार्य महत्वपूर्ण होता है, जिससे उनका जुडाव होता है। उसी में दक्षता प्राप्त करना अपने व्यवसाय को उन्नत बनाना, आमदनी के और जरिए निकालना ऐसी ही आशा के साथ वे प्रौढ़ शिक्षण की ओर उन्मुख होते हैं।

पूरे विश्व में प्रौढ़ शिक्षण कार्यक्रम को एक आन्दोलन के रूप में स्वीकार किया गया है। अधिकांश देश नाइजीरिया सरकार द्वारा मान्य प्रौढ़ शिक्षण के उद्देश्यों को ही आधार मानकर, अपने देश में उन्हीं आदर्शों का पालन करते है।

1. उन प्रौढ़ो को क्रियात्मक शिक्षण प्रदान करना जो कभी किसी प्रकार के औपचारिक शिक्षण से लाभान्वित नही हो पाए।
2. उन युवाओं को क्रियात्मक उपचारी शिक्षण प्रदान करना जो औपचारिक विद्यालयी शिक्षण व्यवस्था के समय से पूर्व विलय हो गये।
3. औपचारिक शिक्षण प्राप्त विभिन्न वर्गों को लोगों को लोगो के निमित अतिरिक्त शिक्षण व्यवस्था करना जिससे वे अपना बुनियादी ज्ञान बढ़ा सके तथा अपने कार्य–कौशल्य में उन्नति ला सके।
4. विभिन्न वर्गों के कार्यकर्ताओं एवं पेशावरों को सेवाकाल में ही व्यावसायिक एवं कार्य–क्षेत्र से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान करना जिससे उनकी कार्य–दक्षता बेहतर हो सके।
5. जन प्रवोधन हेतु देश के प्रौढ नागरिकों को आवश्यक सुरूचि सम्पन्न सांस्कृतिक एवं नागरिक शिक्षण देना।
6. प्रमुख समसामयिक समस्याओं तथा सामाजिक परिवर्तनों के तर्कपूर्ण अध्ययन का विकास करना।
7. नये ज्ञान, योग्यता, मनोवृत्ति या व्यवहार प्रारूपों की प्राप्ति हेतु अभिरूचि या रूझाान का विकास करना।
8. कार्य–क्षेत्र में व्यक्ति की सचेतन एवं प्रभावी सहभागिता को सुनिश्चित करना।
9. व्यक्ति एवं उसके भौतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के पारस्परिक सम्बन्धों के मध्य सजगता बढ़ाना।

महत्व

शिक्षा मनुष्य को सत्य की पहचान कराने वाली है। यह ज्ञान की ऑख देती है। यह हमारी सोई प्रतिभा को जगाकरा उसे कारगार बनाती है। देखा जाये तो समुच विश्व एक खुली हुई पाठशाला है। हर व्यक्ति जीवन भर कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है व्यक्ति के लिए उसका अनुभव ही शिक्षा का स्वरूप है किन्तु उम्र के पहल पडाव को जिसे सामान्यता विधार्थी जीवन करते है। यही शिक्षा के लिए उपयुक्त स्वीकार किया गया है। भारतीय दृष्टी से इसे बृहमचर्य आयम कहते है यह पॉच वर्ष तक के बालक माता के निदेशों में जीवन की प्रारम्भिक बाते सीाखतें है। पॉच से पच्चीस वर्ष उसके लिए यह शिक्षा पाने के लिए निशिचित किय गये है।

यह विधिवत शिक्षा का स्वरूप है। विद्वानों का यह मानना है कि शिक्षा तो जग भी, जहॉ भी, मिले उसे हाथ बढ़ाकर स्वीकार करना चाहिए। प्रौढ़ शिक्षा निश्चय ही एक प्रशंसनीय योजना है।

निष्कर्ष

भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए यह आवश्यकता है कि यहॉ शिक्षित व्यक्तियों को प्रौढ़ शिक्षा में सक्रिय योगदान करना चाहिए। निरक्षरता को प्रौढ़ शिक्षा को लोगो तक लाना और उन्हे अक्षर ज्ञान कराना साधारण काम नही है।

इस क्षेत्र काम करने वाले कार्यकार्ता इसे बता सकते है कि यह कितनी ढेढी खीर है।

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं एन0सी0सी0 के द्वारा प्रौढ शिक्षा के कार्यक्रम चलाये जाने चाहिए तथा कानून बनाकर ऐंसा प्रवाधान कर देना चाहिए कि स्नाताक की उपाधि तभी प्राप्त होगी जब प्रत्येक विधार्थी कम से कम पॉच व्यक्तियो को साक्षर कर देगा। किन्तु हमे धैर्यपूर्वक इसे एक जन आन्दोलन के रूप में इसे विकसित करना है यह तभी संभव है जब प्रेत्यक शिक्षित व्यक्ति इस कार्यक्रम को अपने जीवन का उपदेश बना ले निराक्षर को अक्षर का ज्ञान कराना एक पुण्य कार्य भी है जो हमारे इस्लोक और परलोक दोनो को सुधारता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा डॉ0 आर0 ए0 (2001) शिक्षा अनुसंधान, लाल बुक डिपो, मेरठ।*
2. *कपिल एच के (1975) सांरिणकार्य के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
3. *पाटक डी0पी0 (1996) शैक्षिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
4. *पचौरी डॉ0 गिरीश (2014) शिक्षा का सामाजिक आधार, लायन बुक डिपो मेरठ।*
5. *राका राठौर आगरा पब्लिकेशन, आगरा*
6. *रीना खनूजा मेरठ पब्लिकेशन, मेरठ*